आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता की ओर बहकते कदम

डा० दीपा पाठक
एसोसिऐट प्रोफेसर
एन०के०बी०एम०जी० कॉलेज, चन्दौसी
ईमेलः drdeepa2211@gmail.com

सारांश

आधुनिकता एक विवादास्पद अवधारणा है। सामान्यतः यह समझा जाता है कि इसका आविर्भाव 17 वीं शताब्दी में हुआ, लेकिन इस प्रक्रिया में गति 19वीं शताब्दी के अन्त और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आयी। कहना अतिशयोक्ति न होगी कि यह अवधारणा फैशनबल अवधारणाएं है। कुछ समाजशास्त्रियों को ले तो जैसे– दुर्खिम के अनुसार आधुनिकता बढ़ता हुआ स्तरीकरण है। बेवर ने इसे वेक से जोड़ा है, कार्ल मार्क्स के अनुसार यह केवल (Commodification) पाष्यीकरण है।उत्तर आधुनिकता जैसी अवधारणायें पुराने, ठोस सिद्धान्तों को समुद्र की गहराई में फेंकने को उद्यत है। उत्तर आधुनिकता में विश्वास रखने वाले विद्वानों का मत है आने वाले समाज में समाजवाद के आने की सम्भावना शून्य के बराबर है। हमें पूंजीवाद, मीडिया, अति यथार्थता जैसे प्रत्ययों के साथ ही जीना और मरना होगा।लेकिन एक दूसरा समूह भी है जो इसकी ओर निंदा भी करता है। उनका मानना है कि उत्तर आधुनिकता एक खतरे में भरा समाज है जो कभी भी हमें रसातल में धकेल सकता है। यह एक अंधी गली है जिसका कोई छोर ही नहीं है।

मूल शब्द

आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता, वैश्वीकरण

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डा० दीपा पाठक

आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता की ओर बहकते कदम

शोध मंथन, जून 2018,
पेज सं0 180–183

Article No. 28
http://
anubooks.com?page_id=581

आधुनिकता का अर्थ साहित्य में बहुत ही विचित्र है जैसे जो समझ में न आए वह आधुनिक है चाहे वह हिन्दी कविता हो, अंग्रेजी कविता हो या चित्रकार द्वार बनाई गई कोई पेंटिग हो। बोलचाल की भाषा में आधुनिकता का अर्थ है जो मन में आए सो लगा लो। लेकिन समाजशास्त्री और दार्शनिक इसको तकनीकी से जोड़ते है। उनका मानना है कि जब एक काल समाप्त हो जाता है तब दूसरा काल आता है। कुछ भारतीय समाजशास्त्रियों ने इसकी तुलना बेलगाम घोड़े से की है जिसे नियन्त्रण में रखना कठिन है। आधुनिक समाज ने सामाजिक संबंधों को राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय धरातल दिया उपभोक्तावाद के कारण बाजार अन्तरराष्ट्रीय बन गये। जीवनशैली बदलने लगी शाक्ति की राजनीति व्यापक हो गयी।कुछ भारतीय समाजशास्त्रियों की बातें करें तो जैसे दीपांकर गुप्ता के अनुसार यह व्यवहार परिवर्तन है, योगेन्द्र सिंह के अनुसार यह व्यवहार निर्धारण करने वाली मूल्यों की गठरी है। धीरे–धीरे समय बदलता गया लोगों के सामने भी परिवर्तन होते गए। अल्पआधुनिकता के साथ औद्योगिकता और पूंजीवाद आए। सामन्तवाद खत्म हुआ, उदार प्रजातन्त्र आया।

भारतीय समाज और आधुनिकता

भारत परम्पराओं की गढ़ है, यहां जब आधुनिकता आई तब इसका स्वरूप यहां की परम्परा के अनुसार ढल गया। अतः आधुनिकता के जिन लक्षणों को हम यूरोज और अमेरिका में पाते हैं वे यहां नहीं है। दीपांकर गुप्ता की पुस्तक मिस्टेकन मॉडर्निटी (Mistaken Modernity 2000) में आधुनिकता से जुड़े कई भ्रमपूर्ण विचारों का खण्डन किया गया है। जैसे–आज कुछ ऐसा हो गया कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको मॉडर्न बताने का प्रयास करता है। वह व्यक्ति जो न समय पर अपने दफ्तर आता है, न कॉलेज में पढ़ाता है, अतः पूरी तरह कामचोर है उसकी आधुनिकता इसी में है कि वह अपने हिस्से का कोई काम नहीं करता पर पगार पूरी लेता है। साथ ही दीपांकर गुप्ता का मानना है कि समकालीन होना, तकनीकी तन्त्र का उपयोग करना उपभोक्तावादी होना, हिंसक व्यवहार करना ही आधुनिकता नहीं है, बल्कि समानता का व्यवहार और आदर भाव ही आधुनिकता है।

श्री योगेन्द्र सिंह जी ने (Modernization of indian Tradition) कहा कि आधुनिकीकरण का एक विशेष मिजाज है। इसके प्रभाव से जो प्रतिमान बनते हैं वे कभी भी एक समान नहीं होते हैः हिन्दू सामाजिक व्यवस्था पर अलग और मुस्लिम सामाजिक व्यवस्था पर अलग, गांवों में अलग और शहरों में अलग। साथ ही योगेन्द्र सिंह यह आशा करते हैं कि ज्यों–ज्यों आधुनिकीकरण का प्रभाव समाज पर बढ़ेगा, वैश्वीकरण तीव्रतम होगा, संचार में विस्फोट होगा, त्यों–त्यों भूमिका संरचनाओं में समाना आयेगी और इससे जुड़े हुए मूल्यों में भी वृद्धि होगी। थोड़े समय के बाद परम्पराओं में जो जड़ता है वह भी क्षीण हो जायेगी और तब भारतीय समाज भी अन्य आधुनिक समाजों के स्तर में अपनी साझेदारी करेगा। ऐसा लगता है कि आज का भारतीय समाज नव–आधुनिक समाज के स्तर के निकट आ गया है।

उत्तर आधुनिकता रातों रात आ गई हो ऐसा नहीं है। आधुनिक समाज की कई विशेषताएं थीं प्रजातन्त्र, उद्योगवाद, प्रशासन की शक्ति आदि। इन सब में उद्योगवाद एक केन्द्रीय

शक्ति थी। इस काल में औद्योगीकरण अपने चरम उत्कर्ष में आया जिसने अर्थव्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन किए। इस आर्थिक परिवर्तन ने ही ऐसी परिस्थितियों पैदा कर दी जिसके कारण उत्तर आधुनिकता का आविर्भाव हुआ। उत्तर आधुनिकता को कोई भी गंभीरता से नहीं लेता। कहतें है कि यह तो हल्के दर्जे का दर्शनशास्त्र है और कुछ के अनुसार यह एक प्रकार की रंगरेली है, जैसे चाहो इसका प्रयोग कर लो।

वास्तव में अरनाल्ड टोयन्बी ने इस पद का प्रयोग सबसे पहली बार किया था। 1979 में ल्योतार ने अपनी पुस्तक (Franois Lyotard the post Modern Condition) में ''इस अवधारणा का उल्लेख किया। शम्भू लाल दोषी के अनुसार इस अवधारणा में कसाव की कमी है। यह रबड़ के तम्बू की तरह है जिधर चाहों उधर घूम जाओ।''

आधुनिकता के बाद विकसित समाज का विकास ही उत्तर आधुनिकता है। यह अवधारणा आधुनिकता की भाँति की भव्य है। इसमें कला, संगीत, साहित्य, प्रौद्योगिकी के नये बिम्ब आए। इसकी सामान्य सोच ने जमाने की करवट बदल दी। उत्तर आधुनिकता ने समाज की दिशा को झकझोर दिया। कई ज्वलंत प्रश्न खड़े किए। कॉरपोरेट पूंजीवाद को सांसत में डाल दिया। जगभगाते बाजारो को ध्वस्त कर दिया और एक नई लोकप्रिय शुद्ध, ग्रहणशील संस्कृति को जन्म दिया।

रिटजर जार्ज की उत्तर आधुनिकता की आशावादी टिप्पणी इस तरह हैः–

उत्तर आधुनिकता के समर्थकों को भरोसा है कि किस तरह आधुनिकता के विज्ञान और विकास के नाम पर अपना बौद्धिक और राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित किया है वैसे ही उत्तर आधुनिकता मनुष्य की मुक्ति के रूप में जिसमें विखण्डन, संस्कषतियों की बहुलता और समूहों की विविधता है, अपने आपको स्थापित कर लेगी। इसमें सैकड़ों फूल खिलेंगे। यह इसके विकास में ही है कि अगणित अल्पसंख्यक समूह, उस के लिये पिछड़े और कमजोर वर्ग, स्त्रियों और नाना प्रकार के सम्प्रदाय आगे का पायेंगे।

उत्तर आधुनिकतावादी सभी विचारकों का मानना है कि यह संस्कषति प्रधान है। हमारे देश में भी यह विचारधारा सबसे पहले साहित्य क्षेत्र में आई। लेकिन समग्र रूप से नहीं, सतही स्तर पर। शिक्षाशास्त्र से जुड़े होने के कारण मैं अफसोस के साथ कह सकती हूं कि यह ज्यादातर विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों में कोई स्थान नहीं रखती है। यह केवल अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है।कुल मिलाकर भारतीय समाज अपने विकास के जिस पड़ाव पर हैं उसमें उत्तर आधुनिकता की कोई निर्णायक समीक्षा प्रस्तुत करना बहुत कठिन है यह विद्या अभी भारत में पूरी तरह स्थापित नहीं हुई।

अन्त में यही निष्कर्ष निकलता है कि कुछ क्षेत्रों में उत्तर आधुनिकता भारत में आ गई है, कुछ में आधुनिकता उत्तर आधुनिक समाज की दिशा में बढ़ रही है और कुछ में अब भी भारतीय समाज परम्परा में ही उलझ कर रह रहा है। बहुत स्पष्ट है कि उत्तर आधुनिकता सकलता से भारतीय और दूसरे समाजों में नहीं आ सकती। यह एक प्रक्रिया है जो खण्ड–खण्ड में ही रहती है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया उसे आगे धकेल रहा है। कौन जाने कब भारत उत्तर आधुनिकता की चौखट पर खड़ा हो जाये?

संदर्भ

1. Gupta, Dipankar, Mistaken Modernity, Harper Collins Publishers, New Delhi 2000,
2. Singh, Yogendra, Modernization of Indian Tradition, Rawat Publications, Jaipur 1994.
3. Doshi S.L. Modernity. Post Modernity and Neo-sociological Theories, Rawat Publications, New Delhi. 2007
4. George Ritger: The McDonaldiztion of Society: An Investigation into the Changing character of contemporary social life 1996.